डॉ.पद्मा पाटील
एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि श्री.सचिन भागवत यादव का "गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ" लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 31/01/09

31/01/2009
(डॉ.पद्मा पाटील)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

डॉ. रमेशकुमार विठ्ठल गवळी
एम.ए.,एम.फिल, पीएच.डी.
हिंदी विभाग प्रमुख,
कृष्णा महाविद्यालय, रेठरे बु ॥
(शिवनगर) कराड,
जि.सतारा

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री.सचिन भागवत यादव ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए "गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ" लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस शोध कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 31 जनवरी 2009

शोध निर्देशक

(डॉ. रमेशकुमार विठ्ठल गवळी)
Head of Hindi Department
Krishna Mahavidyalaya,
Rethare Bk. Tal. Karad Dist. Satara

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि "गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ" **यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।**

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 31/01/2009

शोध-छात्र

(श्री. सचिन भागवत यादव)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

❖ **विषय चयन एवं प्रेरणा :**

हिंदी साहित्य के प्रति आरंभ से ही मेरी रुचि रही है जिसमें उपन्यास, कहानी, नाटक आदि विधा है। बचपन में मेरे पिताजी मुझे नाटक देखने के लिए ले जाते थे। मैं वे नाटक बड़े चाव से देखा करता था। जैसे-जैसे मेरी नाटक में रुचि बढ़ने लगी वैसे-वैसे मैं जयशंकर प्रसाद, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, मृणाल पांडे तथा गिरिराज किशोर आदि नाटककारों के नाटक पढ़ने लगा। लेकिन उनमें से गिरिराज किशोर के नाटकों ने मुझे विशेष प्रभावित किया।गिरिराज किशोर के नाटकों में समाज की हर पीड़ा, दर्द, यातना, समस्याओं का चित्रण बखुबी से हुआ है। यह नाटक समाज के सामान्यजन के पक्षधर है। उनके नाटकों पर विविध दृष्टियों से शोधकार्य हुआ है।इसीलिए उन नाटकों के प्रति मेरी रुचि बढ़ने लगी।मैंने मेरे शोध-निर्देशक डॉ.रमेशकुमार विठ्ठल गवळी जी के सामने गिरिराज किशोर के नाटकों पर अनुसंधान करने की इच्छा प्रकट की।

डॉ.गवळी जी ने मुझे इस विषय के संदर्भ में अनुमती दे दी। इस प्रकार मेरे लघुशोध-प्रबंध को **"गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ"** शीर्षक के रूप में मैंने चयन किया।

❖ **प्रस्तुत विषय के संदर्भ में अब तक संपन्न शोधकार्य :**

1 शोध-छात्रा - कु.छाया रंगराव पवार - 'गिरिराज किशोर की कहानियों का अनुशीलन' शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

2 शोध-छात्र - श्री.जितेंद्र विष्णू कांबळे - 'गिरिराज किशोर कहानियों में चित्रित समस्याएँ' शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

3 शोध-छात्र - श्री.प्रकाश विठ्ठल शेटे - 'गिरिराज किशोर के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन' शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

4 शोध-छात्रा - श्री.सुषमा नामे - 'गिरिराज किशोर के नाटकों में सामाजिक चेतना' शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

❖ **शोध विषय का महत्व :**

मेरी जानकारी के अनुसार "गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ" इस विषय को लेकर किसी भी शोध कर्ता ने किसी भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान नहीं किया है। मैंने इस विषय का अनुसंधान प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में किया है। यह लघु शोध प्रबंध इस अभाव की पूर्ति की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में समाज में स्थित मानव जीवन की हर पीड़ा, दर्द, समस्या को स्पष्ट किया है।

❖ **शोध कार्य के दौरान उभरे प्रश्न :**

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में गिराराज किशोर के नाटकों के बारे में जो प्रश्न उपस्थित हुए थे, वे इस प्रकार हैं -

1 गिरिराज किशोर का जीवन तथा उनका रचना संसार कैसा हैं?

2 गिरिराज किशोर के नाटकों का मूल विषय क्या है?

3 गिरराज किशोर के नाटकों का मुख्य उद्देश्य क्या रहा होगा?

4 गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ कौनसी है?

5 गिरिराज किशोर के नाटकों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं का चित्रण किस प्रकार से किया गया है?

6 गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित नारी समस्याएँ कौन सी रही होगी?

7 मंचीयता की दृष्टि से किशोर जी के नाटक कैसे हैं?

उपर्युक्त सभी प्रश्नों के प्राप्त हुए उत्तर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के 'उपसंहार' में दिए गए हैं।

❖ **शोध विषय की व्याप्ति :**

शोध विषय के अनुसंधान के लिए लघु-शोध-प्रबंध की सीमा निश्चित होना आवश्यक होता है। इसीलिए मैंने प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रस्तुत विषय का अध्ययन सूक्ष्मता और योजना बद्धता से संपन्न होने के लिए मैंने प्रयास किया है। उनको निम्न आध्यायों में विभाजित किया है।

❖ **प्रथम अध्याय : "गिरिराज किशोर का जीवन परिचय एवं रचना संसार"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत गिरिराज किशोर के जन्म से लेकर अब तक की उनकी रचनाओं को अंकित किया है। इसमें जन्म, माता-पिता तथा बचपन, परिवार, शिक्षा नौकरी तथा विवाह। रचना संसार में नाटक, उपन्यास, कहानी संग्रह, एकांकी, नाटक संग्रह, आलोचना, बालसाहित्य, अनूदित रचनाएँ, साक्षात्कार, सम्मान एवं पुरस्कार, विशेष सहयोग एवं सदस्य, विदेश यात्राएँ इनको स्पष्ट किया है। अत: अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है।

❖ **द्वितीय अध्याय : "गिरिराज किशोर के नाटकों का सामान्य परिचय"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत के विवेच्य नाटकों का प्रथमत: परिचय दिया है। इस अध्याय में प्रकाशन, नाटकों की कथावस्तु का मुख्य विषय, समाज की हर पीड़ा तथा समस्याओं का चित्रण किया है। हर नाटक के अंत: में निष्कर्ष दिए गए हैं और साथ ही सभी विवेच्य नाटकों का समन्वित निष्कर्ष दिया गया है।

❖ **तृतीय अध्याय : "गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याओं में प्रथमत: समस्या का अर्थ तथा समस्या के स्वरूप को स्पष्ट किया है। उसके पश्चात् अभावग्रस्त जीवन की समस्या को स्पष्ट किया है। सामाजिक समस्या में अंधे कानून की समस्या, घटती मानवीयता की समस्या, जंगलतोड की समस्या, बढ़ती स्वार्थी वृत्ति की समस्या, भीषण युद्ध की समस्या, समाज में बढ़ते गैरकानूनी कार्य की समस्या, अनैतिक संबंधों की समस्या, आत्मसम्मान की समस्या, प्रतिशोध की समस्या, समाज में बढ़ता

खोखलापन या दिखावटीपन की समस्या, पुरानी और नई पीढ़ी के बीच संघर्ष की समस्या, राजनीतिक समस्या, कुटनीति और धोखेबाजी की समस्या, समाज में बढ़ता भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी की समस्या को स्पष्ट किया है। पारिवारिक समस्या में टूटते पारिवारिक संबंधों की समस्या, बदलते रिश्तों की समस्या, माता-पुत्र के टूटते संबंध की समस्या, पति-पत्नी के टूटते संबंध की समस्या को स्पष्ट किया है। विवाह की समस्या में प्रेम विवाह की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, दहेज की समस्या को स्पष्ट किया है। साथ ही आत्महत्या की समस्या और अंधविश्वास की समस्या को स्पष्ट किया है। मनोवैज्ञानिक समस्या में चंचल वृत्ति की समस्या, कुंठित वासना की समस्या, आराजक वृत्ति की समस्या के माध्यम से समाज में स्थित समस्याओं को स्पष्ट किया है। अंत में इन समस्याओं का समन्वित निष्कर्ष दिया गया है।

❖ **चतुर्थ अध्याय : "गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित नारी समस्याएँ"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य नाटकों में चित्रित परिवार से पीड़ित नारी की समस्या, चंचल वृत्ति के नारी की समस्या, असाह्य नारी की समस्या', 'स्वाभिमानी नारी की समस्या', 'अभावग्रस्त नारी की समस्या', पुलिस से पीड़ित नारी की समस्या, आश्रित नारी की समस्या, बदनामी से पीड़ित नारी की समस्या, पिता से पीड़ित नारी की समस्या, पति परायण नारी की समस्या, वृद्ध नारी की समस्या, नारी शिक्षा की समस्या, भयभीत नारी की समस्या, अस्तित्वहीन नारी की समस्या, अपमानीत नारी की समस्या, लैंगिक समस्या से पीड़ित नारी की समस्या, मर्यादा के कारण पीड़ित नारी की समस्या, पुत्रशोक से पीड़ित नारी की समस्या, पश्चाताप से पीड़ित नारी समस्याओं को स्पष्ट कर के अंत में इन समस्याओं का समन्वित निष्कर्ष दिया है।

❖ **पंचम अध्याय : "मंचीयता के दृष्टि से गिरिराज किशोर के नाटक"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य नाटकों के मंचीयता में प्रथमत: रंगमंच के अर्थ को स्पष्ट किया है तथा मंचीयता के अंतर्गत दृश्य सज्जा, अभिनय जिसमें अंगिक, वाचिक, सात्विक अभिनय तथा पात्र तथा चरित्र चित्रण को स्पष्ट किया है।

साथ ही प्रकाश-योजना और ध्वनि संकेत को स्पष्ट किया है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है और स्पष्ट किया है कि गिरिराज किशोर के नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल है या असफल है।

❖ **उपसंहार :**

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में पूर्व नियोजित अध्यायों का सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उनकों 'उपसंहार' के रूप में दर्ज किया है। अंत में आधार ग्रंथ सूची और संदर्भ ग्रंथ और कोश ग्रंथ सूची दी है।

❖ **शोध कार्य की मौलिकता :**

1. विवेच्य नाटकों में भ्रष्ट कानून, राजनीति का पर्दाफाश होता है।
2. विवेच्य नाटकों में नारी जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण मिलता है।
3. नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच होनेवाले संघर्ष को स्पष्ट किया है।
4. समाज के सामान्य लोगों के अधिकारों की आवश्यकता पर बल दिया है।
5. नारी शोषण के खिलाफ आंदोलन की आवश्यकता का महत्त्व विशद किया है।

ऋणनिर्देश

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोध कार्य की पूर्ति में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरूजनों, हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समजता हूँ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.रमेशकुमार विठ्ठल गवळी जी के प्रेरणादायी निर्देशन का फल है। उनके प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा स्नेह के कारण यह कार्य पूर्ण हो पाया है। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने मेरे अनुसंधान कार्य को निरंतर गतिशील बनाए रखा। उन्होंने मेरे अस्मिता को जो ज्ञान दृष्टि तथा दिशा दी है। उसे अगर मैं जीवन में सजग रख सखा तो वह उनके प्रति मेरा आभार प्रदर्शन होगा।

इस लघुशोध-प्रबंध के आरंभ से लेकर पूर्णता तक प्रोफेसर एवं हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष मेरे गुरूवर्य प्रो.डॉ.अर्जुन चव्हाण तथा गुरूवर्या प्रो.डॉ.पद्मा पाटील, डॉ.शोभा निंबाळकर आदि का मुझे समय-समय पर प्राप्त सहयोग और मार्गदर्शन मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ाता रहा।

मेरे बी.ए. के गुरूवर्य प्रा.दादासाहेब खांडेकर तथा शिक्षण शास्त्र महाविद्यालय, कागल की प्रधानाचर्या डॉ.लकाडे एस् एस्, प्रा.पवार सर, प्रा.घाडगे सर, कराळे सर, प्रा.पत्रावळे मॅडम, प्रा.गायकवाड मॅडम, प्रा.इंगळे मॅडम और प्रा.पाटील मॅडम आदि का मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन मिला।उनके प्रति मैं आदर प्रकट करता हूँ।

इस लघुशोध-प्रबंध की पूर्णता में मेरी माता सौ.कमल (सुभाबाई), पिता श्री भागवत, बहन सौ.राणी खंडागळे, सुनिता माने, मंगल, चिंगु, जिजाजी जयराम खंडागळे, भांजा अथर्व(मितू), सुमित, सायली, भाई राजु खंडागळे, बालाजी, महादेव, ज्ञानेश्वर मेरे मामाजी शिवाजी भोसले(नगर भूमापन अधिकारी),नवनाथ माने, नागनाथ माने तथा मामीजी प्रणिता भोसले, चाचाजी दगडू, अर्जुन, चाची-शिंदूबाई, निलावती,

दादाजी- चंद्रकांत, दादी-रूक्मिणी आदि ने मेरा हौसला बढ़ाया। उनके प्रोत्साहन का ही फल मेरा लघु शोध-प्रबंध है।

मेरे मित्र परिवार के सदस्य बाबासाहेब झांबरे, झाकीर काझी, दिपक जाथव, रमेश जगताप, मालोजी जगताप, नवनाथ भोसले, दत्ता उन्हाळे, दिगंबर शिंदे, सागर आदमापुरे, कुमार पाटील, युवराज मोरे, विजय बेदरे, पृथ्वीराज खंडागळे, सचिन कुंभार, रत्नाकर खंडागळे, अमर कांबळे, युवराज घोड़के,कुमार गिरी,सिद्धेश्वर जाधव और नारायण भोसले आदि की शुभकामनाएँ तथा प्रोत्साहन मुझे निरंतर मिलता रहा। साथ ही विद्या पाटील, कांचन घाडगे, शिल्पा, सौ.स्मिता माने, प्रभावती पूजारी, जयश्री जमदाडे और स्मिता चव्हाण आदि की शुभकामनाएँ मेरे साथ रही। अत: मैं इनकी आत्मीयता एवं सहयोग की भावना के प्रति आभारी हूँ। हिंदी विभाग के कर्मचारी डॉ.मंगेश कोळेकर, अवघडे मामा आदि का आभारी हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के उन सभी कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मदत की। इस लघु शोध-प्रबंध का सुंदर रूप में टंकण करनेवाले 'अविज् कॉम्प्युटर सर्व्हिसेस' के अविनाश कांबळे का मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

अत: कुछ ऐसे भी करीब के लोग है जिनका नाम लिखना अनजाने में रह गया हो तो उनके प्रति भी आभार व्यक्त करते हुए मैं अपना लघु शोध प्रबंध विद्वानों के सामने विनम्रता पूर्वक परिक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि :

शोध-छात्र

(सचिन भागवत यादव)